* श्रीसीतारामाभ्यांनमः *

श्रीविनय चालीसी

भाषा टीका।

श्री १०८ मान्यवर श्रीस्वामी सियाशरणजी
महाराज मधुकरियाजी की आज्ञानुसार
श्री १०८ मान्यवर श्रीराजकिशोरीवर
शरणजी महाराज (परमानन्दजी)
रहस्य प्रमोदभवन जानकीघाट
जैपुर मंदिर श्रीअयोध्याजी

॥ मे ॥

टीका कर प्रकाशित किया।

प्रथम बार] सन् १९३२ ई० [१०००

नीलाम्बुज श्यामल कोमलांङ्ग सीता समारोपित बाम भागम् ।

पाणौ महासायक चारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

Oriental Press, Fyzabad

श्रीमान् मैनेजर—पं० कृष्णदत्त द्वारा
ओरियन्टल प्रेस, स्वर्गद्वार श्रीअयोध्याजी
* में *
छापा गया।

भूमिका

परात्पर श्रीपरमप्रभू सर्वशक्तिमान् श्रीयुगलसरकार की कृपा का हेतु कोई साधनादि तो हो नहीं सकता केवल श्रीयुगल कृपा का ही भरोसा रखकर परम भागवत जन श्री-युगल चरणकमल आश्रयावलम्ब हो लुब्ध मधुपइव अवच्छिन्न सनेही बनकर परम सुख का लोभ उठाते हैं जिस सुख को बड़े २ जोगीश मुनि लालायित रहते हैं।

विनयचालीसी में वही माधुर्य सुख प्रति एक दोहे में टपकता है। यह भाव सर्व साधारण की समझ में बड़ी कठिनता से आता है। इसी से इसकी टीका अत्यन्त आवश्यक समझ कर इसका टीका किया गया है कि इसको सर्व साधारण पढ़ कर श्रीयुगल सरकार की अर्थ सहित विनै करें जिससे इनकी प्रार्थना अधिक अस्पष्ट हो जाय और उनकी कृपा शीघ्र ही प्राप्त हो।

शेष में गुणग्राही रसिक महानुभावों से यही प्रार्थना है कि जीव के स्वभावता अल्पग्य होने से टीका की रचना में जो कुछ त्रुटि रह गई हो उसे दोष परिहार कर वे मेरा परिश्रम सफल करें जिससे मैं पुनः उनकी सेवा योग्य बनूं।

—:※:※:※:—

प्रार्थी—

श्रीराजकिशोरीवर शरण,

रहस्य प्रमोदभवन।

* श्री बिनय चालीसी *

*** दोहा ***

हे सीते नृप नंदिनी, हे रघुराज किशोर।
तुम बिन तलफत हूँ सदाँ, कृपा करो मम ओर ॥१॥

अर्थ—हे[1] सीते[2] जो आप सर्व सक्तेश्वरी[3] सो अपनी अहेतु की करुणारस स्वयं प्रगट भईं किसी कारण गुण तत्व प्रकृतादि करिके भईं हो व सो तो है नहीं, आप गुण प्रकृतातीत पर्म ऐश्वर्य लींव होते हुए श्रीनृप[4] विदेह महराज की नन्दिनी[5] होती भईं, अरु परम तत्वज्ञ जो अहरनिसि ब्रह्म ज्ञान में लीन ऐसे बिज्ञानी श्री विदेह महराज सो आपके माधुर्य लीला में मगन हो गये। (आपके प्रेम स्नेह बस आप पर अति वात्सल्य करते भये) अरु हे[1] रघुराज[2] (रघु नाम जीव का है आप संपूर्ण जीव रूपी प्रजा के महाराज सर्ब विधि रक्षक पोषक परम ईश्वर[6] सो रघु जो रघुवंश जो परम उदार शरणागति रक्षक दान दक्ष सर्व सौशील्यादि गुणों करिके पूर्ण रघुराज श्री चक्रवर्ती दशरथजी महाराज तिन्हके परम प्रेम स्नेह बस) (आप सदैव षोड्श वर्ष नित्य किशोर वय नित्य परधाम बासी) सो

---

१. प्रार्थक वाचक, २. ऐश्वर्य सूचक आपका सीता नाम अनादिता जाहिर करे है, ३. सर्व शक्तियोंकी ईश्वरी जासु अंश उपजहिं गुन खानी, अगणित उमा रमा ब्रह्माणी। इत्यादि॥४. प्रजाको प्राणों समान पालन करने वाले नोतक, ५. माधुर्य सूचक, ६. शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंश ते नाना।

अपनी अहेतु की करुणाबस श्रीचक्रवर्ती कुमार होते भये—सो इस[1] प्रकार तो आप दोऊ महा प्रभू अहेतु की कृपा करने वाले अरु मैं[2] सदा आप दोउन के बिना तलफ[3] रहा हूँ सो अब आप दोऊ हमारी ओर (हमारे ऊपर कृपा कीजिये सदा के लिये कृपाल हो जाइये जिससे कि मैं आपके वियोग रूपी तलफन में न पडूं आप दोउन के सेवा स्मरन सहित सदा रहूँ ये प्रार्थना है।

हे निमि बन्श उजागरी, हे रघुबर कुल भाँन।
कृपा करो जन जानके, मैं हूँ निपट अजाँन॥ २॥

अर्थ—यदि आप कहो कि तुमने ऐसा कौन सुकृत किया है जो हम कृपा करें तिस पर कहते हैं कि हे निमि बन्श को उजागर करने वाली श्रीकिशोरीजी निमि बन्श तो सदा बिशुध्य सुच्छ अद्वैत रूप उजागरही रहा तिस उजागर बन्श को भी आप अपनी अहेतुक असीम कृपा करुणा द्वारा अति दीप्ति[4] (परम उजागर करने वाली भई। अरु हे रघुबर कुल भांन हे रघु श्रेष्ट हे रघुकुलोद्भव रघुकुल तो सदा बिसुद्ध सुच्छ सकल शुभ गुण सम्पन्न रहा पर आपने अपनी अहेतु की कृपा करुणा द्वारा परम दिवाकर वत प्रगट होकर संपूर्ण रघुकुल रूपी कमल समूहों को अति प्रफुल्लित किया (अति आनन्द दिया, अति उजागर किया) (इस प्रकार आप उजागरों को भी परम उजागर करने वाले दोऊजनें परम प्रभु हैं) सो मुझको अपना जन जानके कि ये हमारा है बस हमारे पर कृपा करो (यदि आप मेरी ओर देखो तो मैं निपट करिके अजान हूँ—(मुझसे कोई भी कर्म आप

१. ग्रन्थ कर्ता, २. जन्म जन्मांतरों से आपका बियोगी, ३. जीवन मरन संकट में है, जैसे कोई तृषावंत बिना जल के तलफै या जैसे मीन थोड़े जलमें तड़फड़ावे तलफै इसी प्रकार मैं तलफ रही हूँ आप दोउन की कृपा बिना हे प्रभु ये तलफन दूर नहीं होने की, ४. अति प्रकाशित।

के कृपा करने कराने योग्य बनने का नहीं) आपी अपना जन जानके कृपा करो तो करो।

हे प्रीतम प्यारी सदा, हे प्रिय बल्लभ लाल।
चाहत कृपा कटाच्छ को, मेटौ भव के जाल ॥ ३ ॥

अर्थ—हे सियाजू आप कैसा हैं कि श्रीप्रीतमजू को सदा प्यारी हो (आपके प्रेम से श्रीप्रीतमजू का मन किंचित किसी समय भी अलग नहीं रहता है। अरु हे रघु श्रेष्ठ श्रीलालजी आप श्रीप्यारीजू को सदैव प्यारे हो आपके प्रेम से श्रीसियजू कोई छिन भी खाली नहीं रहतीं हैं। इस प्रकार जो आप दोऊ परस्पर एक दूसरेके प्रेमकी सींव हैं) आप दोऊ प्रेम मूर्तियों का मैं[1] किंचित केवल प्रेम रूपी कृपा कटाच्छ ही अपने पर चाहता हूँ (यदि आप बूझें की तुम काहे को कृपा कटाच्छ चाहते हो) तो जो मैं अनेक जन्म जन्मांतरों के प्रवाह रूपी भव जो संसारी जाल तिसमें बहा चला जारहा हूँ, सो आपके किंचित कृपा कटाच्छ से ही मैं भव के जालों से मुक्त हो जाऊँगा।

सो हे श्रीयुगल प्रान प्यारे प्रभु आप मेरे पर किंचित कृपा कटाच्छ करिके हे प्रभो भव जाल से मुझे निवृत्त कर दीजिये (यही प्रार्थना है)।

कृपा रूपणी जानकी, कृपा रूप रघुनाथ।
कृपा कटाच्छ निहारिये, राखो अपने साथ ॥४॥

अर्थ—(सो हे श्रीयुगल प्रभु प्यारे आपको कृपा करने के लिये कोई प्रयत्न ता करना नहीं हैं) हे श्रीजानकीजी आप तो कृपाकी मूर्ति हैं (और आपही सब जीवन की जीवन रूपा जीवनी हैं) और हे श्रीरघुनाथजी आप कृपा के ही मूर्ति हैं। (और रघु[2] कहीं जहां तक जो जीव है तिन्ह सबके नाथ[3] रक्षक पोषक आपही हैं। इस प्रकार

१. ग्रन्थ करता, २. जीव, ३. मालिक।

आप दोउ सर्वोपर कृपा मूर्ति हैं) सो आप कृपा कर किसी भी नाते से हमारी ओर कृपा कटाक्ष कर अविलोकन कीजिये (यदि आप पूछें कि तुम क्या चाहते हो) तो हमारी यही अभिलाषा है कि आप अपनी हजूरी में हमें रखिये ।

हे चन्द्र बदन मृग लोचनी, हे कमल नयन श्रीराम ।
कृपा तुम्हारी चाहिये, बसिये मम उर धाम ॥ ५ ॥

अर्थ—हे चन्द्र ऐसे बदन वाली शशि मुखी हे मृग ऐसे नेत्र वाली मृग लोचनी श्रीसियाजू, हे कमल ऐसे नेत्र वाले कमल नयन श्रीरामजू और बस यही हम चाहते हैं कि आप दोऊ श्रीप्राणवल्लभ जू हमारे उर में (हृदयस्थल में) बसिये और कैसे बसिये कि हमारे हृदय में आप सदैव निवास[1] कीजिये (यदि आप कहें कि हमारे बसाने योग्य तुम्हारा हृदय है । हम तुम्हारे हृदय में कैसे बसें कैसे अपना धाम बना लें) इस पर आप[2] षष्ट सम्बन्ध जनावते हैं कि—

हे श्रीचारुशीला की स्वामिनी, रूपलता की प्रान ।
रामलला की प्राण प्रिय, सदा रहो मम ध्यान ॥६॥

अर्थ—हे श्रीचारुशीलाजू की स्वामिनी श्रीसियाजू जैसे आप श्रीचारुशीलाजू की स्वामिनीजू हैं, वैसेही मैं[3] श्रीचारुशीलाजू की लघु सहचरी हूँ तो फिर मेरी भी आप परम स्वामिनीजू हैं और फिर इस रूपलता[4] नाम सहचरी की तो आप प्राणवत सर्वोपर प्रान ही हौ (जैसे देह का सब कुछ प्राणही है प्राण से अधिक कोई कुछ प्रिय नहीं है तैसे ही मेरेको तो प्रान सम परम प्रिय रूप आपही हौ फिर श्री रामलालजी की तो आप सदा, नित्य प्रान प्यारी हो सो ये ध्यान तो हमारे सदाही रहता है अथवा (हे श्रीसियजू आपका ध्यान श्रीप्री-

१. हमारे हृदय को अपने रहने का धाम बना लीजिये, २. ग्रंथ करता, ३. ग्रंथ करता, ४. ग्रन्थ करता का महल सम्बन्धी नाम,

तमजू के सहित ये श्रीयुगल प्राण प्यारो ध्यान सदा[1] हमारे हृदय में बसै ये प्रार्थना है।

भूम[1] सुता हे लाड़ली, हे सियबर सुखदान।
तुम बिन जीवन है बृथा, कृपा करो सुख खान।७।

अर्थ—हे भूमसुता आप पृथ्वी सुता हैं (पृथ्वी के समान छमा एक रघुनाथजी में ही बरनन की गई है) फिर आप तो और बढ़ गईं पृथवी से भी अधिक छमाधर भईं, काहे से कि कारन ते कारज कठिन होता है इससे हे लड़ली हे सियजू आप श्रेष्ठ सुख की देने वाली श्रेष्ठ सुख दाता हैं (इसके अनन्त प्रमाण हैं) कैसा भी अपराधी जीव आपके सन्मुख भया कि आपने अपनी छमा द्वारा उसके अमित अपराधों को दूर किया हे लाड़लीजी और फिर कैसी हो आप श्रीसियबर सुखदान हो आपके बर जो परम सुख स्वरूप श्रीरघुनाथजी तिनको भी परम सुख देने वाली तिनकी परम सुख[3] स्वरूप आप हैं। इससे हे सियबर सुखदानजू हे भूम[4] सुताजू हे श्री-लाड़ली[5] सियजू आपके सम्बन्ध भये बिना जीवको जीवन फल रूपी कल्याण नहीं आपके आश्रयालम्ब उपाय सून्य शरणागति बिना सुन्दर मानुष जन्म प्राप्त का जीवन ही बृथा[6] है इससे जो सम्पूर्ण सुखों[7] की खान जो आपकी कृपा सो अब मेरे पर कीजिये आपकी कृपा बिना जीव को जीवन का सुख[8] नहीं। यही[9] जीवन का सुख है।

---

१. आप दोउन प्रान प्यारेन का स्मरन न भूले, २. पृथवी छमा रूप है ताहीसा आपको प्रादुरभाव प्रकट होनो भयो है तो आप छमा मूर्तिही ठहरी, ३. परम सुखको भी परम सुख, परम सत्ता, परम अह्लाद स्वरूपा, ४ स्वयं प्रगट जैसे की तैसे कोई कृत्रम मय नहीं, ५. परम माधुर्य परम सुन्दर स्वरूपा, ६. निर्थक भारवत, ७. सदान स्थान, ८. मम दर्शन फल परम अनूपा। जीव पाय निज सहज स्वरूपा॥ ९. श्रीराजी का दर्शन,

रघुबर प्यारी लाड़ली लाड़लि प्यारे राम।
कनक भवन की कुंजमें बिहरत हैं सुखधाम ॥८॥

अर्थ--श्रीरघुकुल श्रेष्ठ श्रीरघुनाथजी की परमप्रिया श्रीलाड़लीजी श्रीसियजू हैं अरु श्रीलाड़ली सियजू के परमप्रिय श्रीरामलालजी हैं (सो दोउ श्रीप्रिया-प्रीतमजू परम सुख के धाम होके जो कहो कि आप श्रीकनकभवन[1] के कुञ्ज २ प्रत विहरनेही से सुखी हैं) सो नहीं अपने आश्रत जनों को सुखी करने के लिये आप कुञ्जन २ प्रत बिहरत सुखी हैं (इससे यह दिखाया की आप दोउ प्यारेन को सुखी करने में कौन[2] समर्थ है-आपी चाहे जिस आश्रत जनों को परम सुख देकर सुखी हों) ये भाव है।

मंद हसन मुस्क्यान पर बलिहारी नृपलाल।
चाहत कृपा कटाच्छको निरखत होत निहाल ॥९॥

अर्थ--हे नृपलालजी हे नृपलाड़लीजी हम आप दोउन के मंद मंद हँसन मंद मंद मुस्क्यान पर बलिहारी[3] जावे हैं। आपकी बलैया लेवे हैं। हम केवल आप दोउ की कृपा कटाक्ष कोही चाहते हैं (यदि आप कहैं कि हम कटाक्ष कर देंगे तो क्या होगा-तिसपर कहते हैं कि आपके कृपा कटाक्ष करतेही उसी बख्त हम सब प्रकार से निहाल[4] हो जांयगे फिर हमारे कुछभी होनेको आनन्द सुख बाकी न रह जायगा) आपकी चितवनही सर्व काम पूरक है ये दिखायो है।

गलबहियां कब देखिहों इन नयनन सियराम।
कोटि चन्द्र छबि जगमगी लज्जित कोटिन काम ॥१०॥

१. सूक्ष्म महल वर्णन, २. कोई नहीं, ३. सर्वस्व वार बिन मोल निछावर होवे है बिकें हैं, ४. सर्व काम पूर्ण,

अर्थ—(उत्कंठा) वो दिन ऐसा कब होगा कि जब आप दोऊ श्रीप्रिया-प्रीतम प्रान प्यारेन को परस्पर गलबाँही दिये इन अपने नेत्रों भरि देखिहौं (कब मन भरि अवलोकन करूँगी) औ छबि करोडों चन्द्रमायों के समान प्रकाशमान जगमग २ श्रीयुगलजोड़ी जगमगा रही है। जिस छबिके सामने कोटिन रति काम लज्जित होते हैं ॥

चवँर छत्र सूरज मुखी लीन्हे सब सुख साज।
पान खवावत सुघर अलि चितवन में बहु लाज ॥११॥

अर्थ—अरु जिस श्रीयुगल छबि के चारो ओर परिकर जन अपनी २ सेवा लिए खड़ी हैं (कोइ चंवर लिए कोइ छत्र लिए कोइ सूर्यमुखी लिए कोइ पानदान लिए कोइ इतरदान लिए कोइ बिजन लिए कोइ और २ भी अनेक प्रकार के) श्रीप्रिया प्रीतमजू के सुखकी साज[1] लिए खड़ी हैं कोइ सुघर[2] सुन्दर अली श्रीयुगल प्रान बल्लभजू को अति लज्जायुक्त कटाक्ष से सुन्दर पान बीरी अर्पन कर रही हैं दोनों प्रान प्यारेन को अविलोकिबे को हृदय में अति चाव है पर लज्जा युक्त दृष्टि होने से दृष्टि मन भर नहीं देख सकती हैं। वा दोऊ प्रान जीवनके अवलोकन चितवतेही अति लज्जा युक्त हो रहती हैं।

वो छबि कब हम देखिहैं नयन चकोरी होय।
युगल चन्द्रहुं देव सो कृपा रावरी होय ॥ १२ ॥

अर्थ—(उत्कंठा) वो ऐसा दिन कब आयेगा जो हम उस श्री युगल चन्द्रछबिको चकोरवत[3] नैन करि (इकटक) चकोरी के समान हो अविलोकन करैंगे हे देव रावरी[4] सोइ[5] कृपा होय जब आपकी कृपा होगी तब ये होगा क्योंकि हमारे पास कोई साधन सम्पति तो कुछ है नहीं (जैसे चकोरी को अपने रूप सौंदर्य द्वारा चन्द्र अति आनन्दामृत पिलाय आनन्द युक्त करे है) चकोरी इष्टी चन्द्र इष्टदेव तैसे

१. सामग्री, २. चतुर सयानी, ३. समान तल्लीन, ४. आपही ५. वही निष्कारन असीम कृपा जिसके बिना जीव आपके ओर नहीं लगता

ही आप हमारे दोउ परम आराध्यदेव अति अह्लाद दाता हैं अरु हम आपके परिकरोंके परिकर हैं आपसे ही आनन्द मानने वाले हैं। (ये दिखाया)।

रङ्ग रंगीली लाड़ली रङ्ग रंगीलो लाल।
रङ्ग रंगीली अलिन में कब देखों सियलाल ॥१३॥

अर्थ—(उत्कंठा) श्रीलालजी के रङ्ग में श्रीलाड़लीजी रंगी अरु श्रीलाड़लीजी के रङ्गमें श्रीलालजी रंगे अरु दोउ प्रानप्यारे श्रीलालजी के रङ्गमें सर्व अलीगन रङ्गी इस प्रकार उज्वल रस तत्सुखी समाज के सहित श्रीसियालालजू को कब हम देखेंगे ऐसा कब दिन आवेगा कि हमभी उसी रङ्गमें रङ्ग[1] तत्सुखी कहावेंगे।

कारुण्यामृत वर्षिनी सीते गुनकी खांन।
जुगलरूप हिरदें बसो यह दीजे बरदान ॥१४॥

अर्थ—हे करुणा रूपी अमृत को वर्षा करने वाली हे शक्ति शिरोमणि, शिरोधार्य सीते हे सर्व सौशीलल्यादिक गुणोंकी खाँन[2] सीते जिन्ह गुणोंके आभास मात्र[3] से ही जगत में परम गुणवानों में गणना होने लगती है चेतनोंकी फिर तिन्ह गुणोंकी आप खान हैं। सो हे श्रीस्वामनी सियजू आपसे हमारी यही प्रार्थना है कि हमारे हृदय विषे आप दोऊ प्यारेन के रूप वसे बस यही हमको बरदान दीजिये यही श्रेष्ठ दान मेरेको बगसने की कृपा कीजिये, आपके किंचित कृपा कटाक्ष से ही हमारा पूर्ण रूपसे भला हो जाता है।

काम क्रोध मद लोभ प्रभु मर्दगर्द करिदीन।
मन नहि मेरे हाथ में विषय बासना लीन ॥१५॥

१, तत्सुखमें रङ्ग जांयगे, २. खदान जहां से शुभ गुन की उत्पत्ति, ३, आपके किंचित आभास से ही,

अर्थ—हे शरणागत प्रतपाल प्रभो ये (बेपार आपापन्थी) काम, क्रोध, लोभादिकों ने हमको चकना चूर कर दिया। (किसी भी काम का न रक्खा) मालिक तो हमारे आप अरु ये काम क्रोधादिक बलात्कार से हमारे मालिक बन रहे हैं और हमको नौने[1] के अपनी परतन्त्र करिके, हमारे स्व-स्वरूप[2] के गर्व को धूर में मिला दिया। (यदि आप कहैं कि मनसे तुमभी कुछ करो तो मन तो हमारे हाथही में नहीं है (यदि पूछो कि मन कहां गया) तो हे प्रणत सुखदायक प्रभो, मन तो प्रथम से ही काम, क्रोधादिकों के बस हो उन्हीं की विषय[3] बासनाओं में लीन होरहा है ये(कार्यरणता)है

ऐसो मन कब होयगो, छबि समुद्र मन मीन।
बिछुरत छोड़े प्रान को, रहै माधुरी लोन ॥१६॥

सो हे प्रभो ऐसा कब होगा कि आप दोउ प्यारेन के छबि समुद्र में हमारा ये मन मीनवत होके रहैगा (श्रीयुगल छबि रूप माधुरी को पोन कर आप दोउन की रूप माधुरी विषे लीन[4] हो रहैगा) रूप माधुरी को बिछुरत (बिस्मरन होते ही प्रानों को परित्याग करेगा। मीन को तो जल सूख जाने का भय, जलके अपर बड़े जीव जन्तुवों करिके मृत्यु का भय तिसपर भी जल ही जिसके प्राण जीवन हैं) अब हे प्रभो ये मन रूपी मीन आपके श्रीयुगल रूप माधुरी सागर में कब उपाधि रहित अति आनन्द पूर्वक मग्न[5] हो रहैगा। भला कहिये तो प्रभो! आपकी कृपा बिना ऐसा कब होने का जब आप श्रीयुगल कृपानुग्रह करेंगे तब ऐसा होगा।

मैं चेरी हूँ चरनकी, राखो सदा हजूर।
प्रेम भक्ति अनपावनी, देवो सजीवन मूर ॥१७॥

१ बिल्कुल २. की हम भगवान के अंश हैं ३, प्रभु विमुख, पंचविषयोलखी बन रहा है ४, तन्मय ५, तल्लीन

अर्थ—इससे हे नाथ मैं आपके श्रीचरणों की चेरी हूँ सो मेरे को आप सदा[1] एक रस अपनी हजूरी[2] में (निज सामीप्य सेवा में रखिये) ये प्रार्थना है और अपने श्रीयुगल चरणकमलों की अवि-चल[3] एकरस सहज प्रेमा भक्ति हमको दीजिये जो भक्ति परम पवित्र रूपा हम सबको परम पावन करने वाली परम सुजीवन रूप परम सजीवन मूरी है। सो हमको दीजिये यही इच्छा प्रार्थना दरबार में पेश है।

हे सरजू जग पाँवनी, त्रिभुवन तारन हार।
दरस परस के करतही, नासत पाप पहार ॥१८॥

(दरबार से चलकर अब श्रीप्रिया प्रीतमजू के समीप पहुँचा देने वाले निज परिकरों में आये[4])

अर्थ—हे श्रीसरजू जी आप कैसी हैं कि सम्पूर्ण जगत को पवित्र करने वाली हैं। पुनः कैसी हैं आप तीनों भुवनों के सर्व लोकों को तारन हारी हैं (नीचे के पातालादिकों को ऊपर के सत्य लोकादिकों को मध्य के प्रदेशों के लोकों को पवित्र करने वाली हो) फिर कैसा आपका जाग्रत प्रभाव है कि दर्शन करते मात्र स्पर्श करते मात्र ही में थोड़े पापों की बात ही क्या है पापों के परबत भी हों तो आप जारके छार करि अति परम पुनीत वारि प्रवाह में बहाय ले जाती हैं—जब हे श्रीसरजू जी आपके दरसन परसन को एती प्रभाव प्रख्यात है तो जो आपके अति परम पुनीत वारि में अस्नान करते हैं वा पान करते हैं आपके निकट बसते आपका समीप नहीं छोड़ते हैं उनके महत्व के परत्व को किसकी समर्थ है कि जो कह सकेगा (श्रीराम चरित मानसकार श्रीमुख द्वारा आपकी महिमा

१. सब दिन अहरनिसि २. निज, निकट, अपने पास ३. स्थायमान न होने वाली ४. ग्रन्थ करता।

लक्षित करावते हैं कि) जा मज्जन ते बिनहि प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥ नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहि न सकै शारदा विमल मति ॥ इत्यादि ॥

अवध अवधको देत हैं, अवध धाम निज धाम।
अवध धाम धामाधिपति, जहँ बिहरैं सियराम ॥१६॥

अर्थ—हे श्रीअवध धाम महाराज आपतो जो बैकुण्ठादिक जितने धाम हैं तिन्ह सबकी अवध[1] हैं। वो धाम, जहां से आगे फिर कोई धाम नहीं है वाही धाम के रूप वही सर्वोपर धाम के देने वाले हो, जो अवध धाम सब धामों का अधिपति है जहां जिस धाम में श्री-सीता बल्लभ जू सदा बिहरते हैं। जो श्रीसीताबल्लभजू को निज[2] धाम है (श्रीरामचरित मानसकार-आपकी भी श्रीमुख से महिमा लक्षित करावते हैं। राम धामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त विदित जग पावनि ॥ अति प्रिय मोह यहां के बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी ॥ धन्य अवध सरजू महारानी । जेहि महिमा श्रीराम बखानी) (श्रीसरजू श्रीधाम को परत्व दिगदरसन मात्र कराय अब आगे अपने प्रिय आश्रतों के लिये परम हितोपदेश करते हैं)

अवधपुरी बसिये सदा, करि सरजू जल पान।
रसना से सिय पिय रटो,हिर्दे में धरि ध्यान ॥२०॥

अर्थ—इस प्रकार की जो अति प्रभावशाली श्रीपरम प्रभु सामीप्य दाता श्रीअवधपुरी तिसको अति अनुराग पूर्वक दृढ़ नेम करिके सेवन कीजिये। सब दिन अवधमें बसिये, अरु जिन श्रीसरजू जीके दर्शन स्परसादि के ही किये से बिना प्रयास[3] ही श्रीयुगल प्रभु को समीप्यता प्राप्त होतीहै तिन श्रीसरजू जीके अस्नान व जलपान

१. हद्द मुजाद रूप २. खास निवास स्थान है ३. बिना साधनादि, बिना उपाय, बिना परिश्रम।

का नेम रखिये श्रीअवधपुरी में बसिये। अरु श्रीसरजू स्नान पान कीजिये अरु रसना से परम सुन्दर श्रीप्रियाप्रीतमजू को नाम रटिये और हृदय में श्रीजानकी बल्लभजू को ध्यान धरिये (चतुष्ट साधन परमसिद्धस्रूप चतुष्ट अन्तहकरन को कहे) श्रीअवध बास कर श्रीसरजू जलपान कर श्रीसियपियजू को ध्यान धरते श्रीयुगल नाम रटिये।

गुरू कृपा से बनैंगी, गुरू लखावैं राम।
गुरु बिन भटक्कत जगत में, कोई न आवै काम ॥२१॥

अर्थ—श्रीगुरु महाराज की कृपा से ही सब प्रकार से बनैगी बिना आचार्य कृपा कोइ प्रकार से भी न बनैगी (श्रीगुरु महाराज कृपा करेंगे तो लौकिक पारलौकिक धर्म कर्म भगवत भागवत धर्माचरनादि भावना उपासनादि) वो परब्रह्म श्रीराम प्रभु स्वामी के स्वरूप को श्रीगुरुमहाराज ही लक्षित करायेंगे (प्रभु कृपा दर्शन का मार्ग लखायेंगे) बिना गुरु कृपा के जगत में भटकते ही फिरोगे कहीं भी विश्राम नहीं मिलेगा। और जगत में भ्रमने पर भी कोई भी तुम्हारे काम न आयगा (आदोप्रान्त तुम्हारा हितू हित करने वाला बिना निज मतलब कोई भी न ठहरेगा)

गुरु कहे नाते जगत के, त्याग त्याग गहु सार।
सीते तेरी स्वामिनी, रघुनन्दन उर हार ॥ २२ ॥

अर्थ—श्रीगुरु महाराज ने सच्चा गुरु बतला दिया कि जगत के जितने स्नेह नाते हैं सब झूठे हैं आखिर कोई थिर रहने वाले नहीं हैं। अनित्त हैं (नासवान है) इससे जगत के सब नातों को त्याग जो इस जगत में सार रूप है। (जगत के स्नेह भ्रमात्मिक सुख से निवृत्ति (त्याग) सो तूं ग्रहन कर) और जो श्रीसीता सर्वेश्वरी सर्व शक्तियों की ईश्वरी सोई तो तेरी परम हित कर स्वामिनी हैं। अव

तिन्ह स्वामिनीजू के प्राणवल्लभजू जो सर्व ईश्वरेश्वर श्रीरघुनन्दनजू हैं सो जिनके उरके हार हैं (तिन्ह के आश्रय हैं) सो इस प्रकार के तेरे श्रीसीता स्वामिनी जू अरु श्रीरघुनन्दन स्वामीजू तेरे उरके हार हैं। (सो इन्हीं श्रीयुगल प्राणवल्लभजू को तुझे सदैव अपने हृदय में भ्राजे[1] रहना चाहिये ये भाव है।)

भइ कृपा श्रीगुरुन की नातौ दीन दृढ़ाय।
चारुशीला चारज करी, मन की तर्क मिटाय ॥२३॥

अर्थ–इस प्रकार गुरुन की (मान्यवर श्रीआचार्यों की कृपा हुई है कि पूर्वोक्त ऐसा तो दृढ़ नाता हमको बता दिया है (दृढ़ाय[2] दिया) कि तुम्हारे सब प्रकार सार सम्हार के वास्ते श्रीचारुशीला जी परमाचार्य हैं। इस प्रकार सर्वोपर सिद्धांत बतलाकर मन की अनेकानेक तर्क वितर्कों को मिटा दिया (पुनः जब मन नाना प्रकार के तर्क वितर्कों को परित्याग कर आचार्यानुकूल चलने को तत्पर भया तब श्रीआचार्य वा श्रीपरमाचार्य श्रीचारुशीलाजी ने मेरे मन की की। अर्थात् जैसी मेरे मन में अभिलाषा थी वैसी संशय रहित पूरन की) (वो कौन सी अभिलाषा पूरन की सो कहते हैं कि)

भई भाँवना महल को, सेवा कर में लींन।
अष्ट भवन की कुंज में, सेवा कर चित दीन ॥२४॥

अर्थ–जो श्रीप्रिया प्रीतमजू की अष्टजाम भावना सेवा की इच्छा थी सो श्रीमहल की भावना प्राप्त भई। सुन्दर आचार्योपदेश सेवा निज रुच्यानुकूल हाथ में लिये श्रीअष्ट भवनों के कुञ्जन विषे तनमय होकर श्रीलाड़ली लालजू की सेवा में चित्त दिये तत्पर हूं। सेवा कर सेवा के विषय ही चित्त दे रखा है (कैसा चित दे रखा है कि)

१. स्मरन, ध्यान रखना, २. सब प्रकार से मजबूत कर दिया

समय समय तत्पर रहे, पिय प्यारी अनुकूल ।
युगल माधुरी छबि निरखि, मिटे जगत के सूल ॥२५॥

श्रीयुगल प्रिया प्रीतमजू के सेवा में समयानुकूल (समय समय पर तत्पर रहत (दोऊ श्रीप्राणवल्लभजू के रुख रुचि अनुकूल सेवा में सब समय सावधान रहतीं) दोऊ प्राणप्यारेन की छबि माधुरी को अविलोकन करिके जगतके जो अनेकन सूल[1] रहे ते विनाश को प्राप्त होते भये (जब तक जीव[2] को श्रीयुगल प्रिया प्रीतमजू की छबि माधुरी का परम लाभ प्राप्त नहीं होता तब तक ये जीव जगतके अनेकानेक दुखों के बीच में पड़ा रहता है) (सत सुख को प्राप्त हो सुखी नहीं होता)

(श्रीमहल भावना सेवा का संकेत दरसाव)

हे सीते नृपनंदिनी, हे प्रीतम चितचोर ।
नवल बधू की बीटिका, लीजे नवल किशोर ॥२६॥

अर्थ—हे सीते स्वामिनीजू हे श्रीनृपनंदिनीजू हे श्रीप्रीतमजू हे चितचोरजू ये नवीन वय वाली बधू[3] आप दोऊ प्राण प्यारेन को पान बीरी अर्पित कर रही है सो हे श्रीनित्त नवल किशोरी श्रीनित्त नवल किशोरजू इसको ग्रहण कीजिये (इसकी यही सेवा है इस नवल बधू की सेवा को आप अङ्गीकार कीजिये)

हँस बीरी रघुबर लई, सिय मुख पंकज दीन ।
सिया लीन कर कञ्ज में, प्रीतम मुख धरि दीन ॥२७॥

अर्थ—इस प्रकार नवल बधू के बचन श्रवण कर दोऊ श्रीप्राण

---

१. दुख, २. मन, बुद्धि, चित्त, अहं चारो का नाम जीव है सो जबतक चारो से (श्रीयुगल माधुरी में आत्मा न लगेगा तब तक नित्यानन्द सेवा सुख का लाभ न होगा) ३. दुलैया।

बल्लभजू प्रसन्न हो मंद मंद हंसकर परम सुन्दर बीरिन को ग्रहण करते भये-प्रथम श्रीप्रीतमजू निज कर कमल से बीरी लेकर श्रीसिय जू के श्रीमुख कमल में धर देते भये पुनः श्रीसियजू निज कर कमल में बीरी लेकर श्रीप्रीतमजू के श्रीमुख कमल में धर देती भईं।

निरखि सहचरी युगल छबि, बार २ बलिहार।
करत निछावर विविधि विधि, गज मोतिन के हार।२८।

अर्थ—यह दोऊ प्रान प्यारेन की परस्पर पान बीरी पावन पवावन की अनुपम सोभा श्रीयुगल छबि माधुर्य को अविलोकन करि बार बार बलिहार २ कहकर बलैयां सहचरि गन लेती हैं अरु प्रथम विविधि प्रकार की बस्तुओंकी निछावरि करि करि पुनः अपने अपने गज मोतिन के अमूल्य हारों को श्रीयुगल छबि पर निछावरि करि २ श्रीयुगल छबि माधुरी को इकटक निरखते ही रह जाती हैं।

रतन सिंहासन राजहीं, गलबहियाँ दिये लाल।
चहुं दिशि अलिगन सेवती, नवल रँगीली बाल॥२९॥

अर्थ--(बैठक संकेत दरसाव) रतनजड़ित सिंहासन पर श्रीयुगल प्रिया प्रीतमजू परस्पर सुन्दर गलबांही दिये ब्राजमान परम सुशोभित हो रहे हैं। अरु चारो ओर से अलीगनों के समूह अपनी अपनी सेवा की सौंज[1] लिये अपनी अपनी सेवा में तत्पर खड़ी हैं श्रीनित्त नवल किशोरी नित्त नवलकिशोरीजू के नित्त नवल[2] रस रंग में नित्त नवल वाला रंग रही हैं।

॥ अब रास का सूक्ष्म दरसाव करते ॥

मधुर मधुर बाजा बजे, बीन मृदङ्ग सितार।
रास रङ्ग रासस्थली, रचना रची अपार॥३०॥

१, सामग्री २, अलीगन, नववय, अली।

अर्थ—श्रीरास कुञ्ज के विषे रासलीला की अपार प्रकार की अनेकन रंग की रचना (सजावटें की गई हैं, और मधुर मधुर धुनि से बीन मृदंग सितारादि अनेक प्रकार के बाजे परम सुहावने मन भावने बज रहे हैं।

चहुं दिशि अलिगन अपार हैं भईं मण्डलाकार।
हाव भाव कटाक्ष को करत सखी बहु बार ॥३१॥

अर्थ—अरु तिस रासकुञ्ज विषे जो अपार सखि गण[1] निज२ समूह के चारो ओर से गोल मण्डलाकार रूप खड़ी होती भई और नाना प्रकार के हाव को नाना प्रकार के भाव को नाना प्रकार के कटाक्षों को सखि गन बारंबार कर रही हैं (अनेक प्रकार के हाव भाव कटाक्ष श्रीप्रीतमजू की ओर सखी गण कर रही हैं।)

मध्य लड़ैती लालजू, रमत सखिन के संग।
कबहुं युगल मिलि नृत्य हैं, थेइ थेइ फरकत अंग ३२

अर्थ-और फिर तिस सखी गणों के मण्डलाकार गोल के बीच में (मध्य स्थल) में श्रीलड़ैतीलालजी रासमण्डल के बीच में खड़े हैं सखियों के साथ रास बिहार (रासलीला कर रहे हैं) कभी २ दोउ श्रीप्राणप्यारे श्रीप्रिया प्रीतमजू हस्थ में हस्थ मिलाय नृत्य करने लग जाते हैं। और थेई थेई करते रास की गतों को भरते उस समय जो आपके परम सुन्दर अति मृदुल अंग फरकते हैं उस समय सबी अंगों के फरकने का जो परम कमनीय सोभा सुखहै सो देखते ही बनता है। कहते नहीं बनता ये भाव है।

---

१. यु० आठ यु० षोड्श यु० बतिस पुन चौसठ पुन अनन्त गोल आवर्ति से रास को तयार।

यह बिधि सबको सुख दियो नवल लड़ैती लाल।
बैठे गलबहियां दिये फसी सखी छबि जाल॥३३॥

अर्थ—इस प्रकार समग्र परिकरों के साथ बिहार[1] कर दोउ श्रीप्राणप्यारेन ने सखीगणों को परम सुख देकर परम सुखी किया पुनः दोऊ श्रीनवल लड़ैतीलालजी सुन्दर परस्पर गलबांही दिये पूर्वोक्त परम सुन्दर रतनजड़ित सिंहासन पर विराजते भये, वो परम सुन्दर गलबाहीं दिये हुये अति कमनीय झांकी को अविलोकन कर समस्त सखी गन तन मन सुध बिसर जाती भई (आप दोउन की झांकी पर विमोहित होती भई) (यदि कोई कहै कि ये सदां की समीप रहने वाली सखी श्रीयुगल छवि देख तन मन सुध बिसर विमोहित हो गई ऐसा क्यों भया) कहते हैं कि श्रीयुगल छवि ऐसी है कि जब देखो तब जान पड़ता है कि ऐसी छबि कभी नहीं देखी रही। इस प्रकार नित नवीन श्रीयुगल छबि की सोभा[2] बनी ही रहती है।

(रास विहार के बाद ब्यारू संकेत दरसावते हैं)

भोग सकल आगे धरे, छै रस चार प्रकार।
जेंवत युगल किशोर मिलि, करत बिनोद अपार।३४।

अर्थ—फिर ब्यारू कुञ्ज में रतनजड़ित चौकी पर ब्यारू भोग अति सुन्दर सकल प्रकार के भोजन की सामग्री सुन्दर मणि पात्रों में ब्यारू[3] कराने वाली सखि गण रख देती भई (खटरस[4] चार[5] प्रकार के विविधि भांति के पदार्थों को लाकर परिकरों ने दोऊ

१. रमकर २. सुन्दरता कान्ति सुखमा ३. जिनकी ब्यारू कराने की सेवा है ४. मधुर, लवण, तिक्त, अलम, तीत, कटु, ५. भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चौस्य।

श्रीप्राणप्यारेन के आगे रखे हैं) आचमनादि कर दोऊ श्रीप्रिया प्रीतम श्रीयुगलकिशोरजू मिलकर जेवने लगे परस्पर कौदर को देते लेते अनेक कौतुक[1] विनोद के साथ भोजन करते कराते भये हैं।

अचमन कर बीरी लई, अतर लगायो अंग।

फूल माल पहिराय उर, राजत सिय पिय संग ॥३५॥

अर्थ – फिर भोजन करने के पश्चात् आचमनादिक कर श्रीयुगल प्राणवल्लभजू श्रीहस्थ कमल धुवाय पोछाय सखियों से पुनः सब प्रकार सेवानुकूल सेवा में सेवा के लिये नियुक्त हो हैं। किसी बीरी सेवा वाली सखियों ने दोऊ श्रीप्राणप्यारे को परम सुन्दर बीरी अर्पित की। कोई अतर सेवा वाली सखियों ने दोऊ श्रीप्राणवल्लभ जू को परम सुगंधित अतर अर्पित कर अतर सेवा[2] की दोऊ प्रान प्यारे बीरी लै परस्पर लेते देते भये वो परस्पर श्रीअगों में परम सुगंधित अतर लगावते भये (ग्रीषम ऋतु का समय है) कोई सखी गण परम सुगंधित सीतल तासीर जिनकी ऐसे परम सुन्दर फूलों की मालायें दोऊ श्रीप्राणवल्लभजू को कंठ से उर तक पहिरावतीं भई (सब ऋतानुकूल आद्योपांत सेवा की) श्रीयुगल प्रियाप्रीतम जू परस्पर अंश भुज दिये परम सुन्दर सिंहासन पर श्रीसियपियजी परम सुशोभित होरहे हैं।

चंवर छत्र सूरज मुखी, कोई पंखा ढोर।

अपनी २ सौंज[3] लिये, सेवत सखी करोर ॥३६॥

अर्थ--कोई सखी दोनों ओर चंवर कर रही हैं, कोउ सखी छत्र दोऊ प्रान प्यारेन को लगाये सुखानन्द में तनमय होइ रही है कोई सखी सूर्यमुखी लिये अति आनन्द सुख में मग्न हो रही है।

१. परस्पर आनन्दमयी परिकरों को परम आनन्द देने वाली लीला २. श्रीअगों में लगावती भई ३. सेवा सामग्री।

कोई सखी दोनों ओर से परम सुन्दर पंखा कर रही हैं इस प्रकार अनन्त परिकर अपनी अपनी सेवा सौंज लिये श्रीयुगल प्रिया प्रीतम जू की सेवा में तत्पर हो रही हैं।

(उपदेश युगल शरणागत जनोप्रत)

यह सुख में चित दीजिये, सकल बासना त्याग।
सेवा सिय पिय अहरनिसि, चरनन में रहु लाग।३७।

अर्थ—(यह सुख में किस सुख में) जो पूर्व कहि आये उसी सेवासुख समाज में चित्त दीजिये (चित्त को दूसरी ओर न जाने दीजिये) संपूर्ण वासनाओं का परित्याग कीजिये ये बिना निर्वासिक हुये पूर्वोक्त सेवा सुख समाज की प्राप्ती न हो सकेगी। श्रीप्रानप्यारे सिय पियजू की सेवा आठो जाम की विधि पूर्वक अहरनिसि[1] कर (समयानुकूल ऋतानुकूल) पुनः ठहरनेके लिये निवास स्थान बतावते हैं कि श्रीयुगल प्रियाप्रीतमजू के श्रीचरनकमलों में मंजु मधुप इव लिपटे लगे रहो। श्रीयुगल चरनों को किसी भी समय परित्याग न करे (ये भाव है)

कृपा करी श्रीजानकी, पायो महल निवास।
युगल चरन सेवत रहौ, दई खवासी खास ॥३८॥

अर्थ—श्री सर्वेश्वरी स्वामिनी श्रीजानकीजू ने कृपा करदी है अपनी असीम करुणा से दयाल भई हैं जोकि महल की सेवा दी है (श्रीमहल निवास प्राप्त भया है। ये जल्दी किसी को बिना श्रीसियाजू की कृपा के प्राप्त नहीं होय हैं। सो श्रीयुगल प्राणप्यारेन के श्रीयुगल चरणकमलों को सेवते रहो (सेवा में तत्पर हो लगे रहो) श्रीयुगल प्रभु प्यारे की कृपा को तो देखो कि जो खास अपने

१. रात दिन।

सामीप्य की सेवा बिना समझे बूझे केवल शरणागत सम्बन्ध होते ही बगस दई है[1]।

योग यज्ञ तीरथ बरत, नहीं तुलत यहि साथ।
सबको साधन यही है, सेवो सीता नाथ॥ ३६॥

अर्थ– कहते हैं कि जोग (अष्टांग जोगादिक वो अश्वमेधाजज्ञादिक तीर्थ प्रागादिक व्रत चन्द्रायणादिक जितने कर्म धर्मादिक साधन हैं श्रीयुगल प्रिया प्रीतम की सेवा के तुल्यता योग्य तो है नहीं।

पूर्वोक्त सब कर्म धर्मादि साधनों का फल रूपी श्रीयुगल सेवा ही एक सर्वोपर सिद्ध साधन हैं (श्रीरा० च० मा० श्रीगो०) कहते हैं कि[2]—

सब कर मत खग नायक येहा। करिये राम पद पंकज नेहा॥
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा। तेहि बिनु कोऊ न पावै छेमा॥
तब पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर फल यह सुन्दर॥
सोई सर्वज्ञ गुनी सोई ज्ञाता। सोई महि मंडित पण्डित दाता॥
धर्म परायण सोई कुल त्राता। राम चरण जाकर मन राता॥
सोई सर्वज्ञ तज्ञ सोई पण्डित। सोई गुन ग्रह विज्ञान अखण्डित॥
दक्षशकल लक्षण युत सोई। जाके पद सरोज रति होई॥
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी। कवि कोविद विरक्त सन्यासी॥
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी। धर्म निरत पण्डित विज्ञानी॥
तरहिं न बिन सेये मम स्वामी। राम नमामि नमामि नमामी॥
प्रभु रघुपति तजि सेइये काही। मोसे सठ पर ममता जाही॥

❋ दोहा ❋

सेवक सेव्य भाव बिन, भव न तरिय उरगारि।
भजहु राम पद पंकज, अस सिद्धांत विचारि॥ इत्यादि॥

२. शिव अज, सुक, सनकादिक, नारद। जे मुनि ब्रह्म विचार, विशारद, १ बकशिश दी है।

ऐसा दृढ़ निश्चय करिके श्रीसीताबल्लभजू की सेवा में रत होवो श्रीयुगल सेवा में प्रेम होते ही आपसे आप सेवा प्रताप सूझ परैगा बिना सेवा प्रेम से किये दिव्य सेवा सुख स्वरूप के लाभ को कैसे प्राप्त कर जान सकै है (सीता नाथ हो सर्वोपरि परात्पर पुरुष हैं इन्हीं को सेवो यही सेवने योग्य स्वाधीन प्रभु हैं)

(ग्रन्थ करता की कार्यपरायता) प्रार्थना आशिरवादात्मक)

रूपलता बिन्ती करी, सुनिये लड़ैती लाल।
राखो सदा हजूर में, तुम हौ दीनदयाल ॥४०॥

अर्थ-(ग्रन्थ करता अपनी कार्यपरायता दिखावते हैं कि इस रूप लता नाम की जो आपकी चेरी हैं इसने आपसे बिनती की है। सो इस बिनती को (मेरी बिनय को) आप श्रवण कीजिये (स्वीकार कीजिये) यदि आप कहैं कि कैसी बिनती की है तो कहती हैं कि आप दोऊ श्रीप्राण प्यारे हमको सर्वदा अपनी हजूरी[१] में (अपनी सामीप्य सेवा में रखियें) यदि आप कहैं कि अपने समीप कैसे रखें तुमने ऐसा क्या काम किया जो हम अपने पास रखें (तिसपर कहते हैं) हमारे कर्मों को न देख (हमारे कर्मों की ओर न ख्याल करिके हमारी दीनता देखकर ही दया कीजिये।) आप तो सदा दीनों पर दया करने वाले हो हैं इससे मुझ दीना पर भी दोऊ प्यारे दयालु हूजिये (ये प्रार्थना है) वा यह रूपलता नाम की चेरी ने जो य चालीस दोहों में विन्ती की है सो हे श्रीयुगल प्राणप्यारे लड़ैता लालजी कोई भी इस विनय को जो आपसे करे (तो आप श्रवन कीजियेगा और इस विनय चालीसी के श्रवण पठन मनन करने वालों को सदैव अपनी सेवा में ही रखियेगा) (अपनी सेवा से

१ पास में ।

विमुख न कीजियेगा) क्योंकि हे प्रभो आप दीनों पर सदा दयाल होते आये हैं आपको दीनों पर दया करते २ दीनदयाल नाम आप की विरदावली ही है सो आप फिर अपने शरणागत दीन अश्रित जनो पर कैसे दयाल (द्रवी भूत न होंगे) अवश्य होंगे ।

श्रीगुरु परम्परा ।

श्लोक ।

रामानन्द महंवदे वेद वेदान्त पारगम् ।
राम मन्त्र प्रदातारं सर्व लोकोपकारकम् ॥
सर्व श्रुति शिरोरत्नं विराजितय पदाम्बुजम् ।
वेदान्ताम्बुज सूर्य्यायतस्मै श्रीगुरुवेनमः ॥

परात्पर श्रीरामजी महाराज । सर्वेश्वरा श्रीसीताजी महारानी अनन्त श्रीहनुमानजी महाराज । अनन्त श्रीब्रह्माजी महाराज । अनंत श्रीबशिष्ठजी महाराज । अनन्त श्रीपरासरजी महाराज । अनन्त श्री व्यासजी महाराज । अनन्त श्रीसुकदेवजी महाराज । अनन्त श्री पुरुषोत्तमाचार्यजी । अनन्त श्रीगंगाधराचार्यजो । अनन्त श्रीसदा· चार्यजी । अनन्त श्रीरामेश्वराचार्यजी । अनन्त श्रीश्रुतानन्दजी महाराज । अनन्त श्रीचिदानन्दजी महाराज । अनन्त श्रीपूर्णानन्द जी महाराज । अनन्त श्रीश्रियानन्दजा महाज । अनन्त श्रीहरियान न्दजी महाराज । अनन्त श्राराघवानन्दजी महाराज । अनन्त श्री रामानन्दजी महाराज । अनन्त श्रीअनन्त.नन्दजी महाराज । अनन्त श्रीकृष्णदास पौहारीजी महाराज । अनन्त श्रीअग्रदासजी महाराज। अनन्त श्रीझांझूदासजी महाराज । अनन्त श्रीगोपालदासजी महा· राज (श्रीसिया सखीजी) अनन्त श्रीबलदेवदासजी महाराज (श्रीचन्द्र सखीजी) श्रीरामानुजदासजी महाराज (श्री रूप सरसजी) श्री

सीतारामशरणजी महाराज (श्रीसुभशीलाजी) श्रीसियारामशरणजी महाराज (श्रीसुशीलाजी)

सीतानाथ समारम्भाम्, श्रीरामानन्दार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यंताम्, बन्दे श्रीगुरुपरम्पराम् ॥

पदः—राजकिशोरी तिहारी शरण मैं ।। तुम हो परम समर्थ स्वामिनी । दीनन के दुख दोष हरन मैं ।। पातक पीन मलीन दीन अति हो जारी जग अधम नरन मैं ।। तुम प्रणपाल प्रणत भय भंजन सब बिधि कुशल पुनीत करन मैं ।। परमानन्द अवलोक सम्हारहु अर्पण है सर्वस्व चरण मैं ।। १ ।।

किशोरीजू के चरण कमल मन भाये । अरुणारे प्यारे जावक युत ललित महा छबि छाये ।। आश्रित जनन परम सुखदायक भव भय हरण सुहाये । सुखमा धाम अमल मति दाता जन मन मधुप लुभाये ।। जिहि सह घरनि शिवादिक ध्यावत, निश बासर मन लाये ।। जगदाधार महातम नाशन फलहु को फल पाये ।। परमानन्द प्रमुदित निश वाशर बिसरत नहिं बिसराये ।। २ ।।

जय जय जयति सीताराम ।। प्रणत सुखदायक दयानिधि दीन जन विश्राम ।। विधि हरादिक जेहि चरणरज सेय लह आराम बिना कारण अपरमित हित रूप जग अभिराम ।। नृप किशोरीबर सरन गह भयो पूरन काम ।।

भगति का गाहक सिय सुख दान । कामादिक भव भीति निवारन बरदायक वरदान । बिना हेतु प्रभु परम सनेही करन परम कल्यान । गह निरुपाय शून्य शरणागत जनवत्सल भगवान ।। मन बच कर्म भरोस जो सबर द्रवि हैं कृपानिधान । राजकिशोरी वर शरणा पर वारत तन धन प्राण ।। ४ ।।

जय प्रभु युगल चरण जहाज । अगम भव सागर सों तारन करन पूरन काज ।। परम तीरथ राजशिरमणि सकल सुख सिद्दि

साज । टरत सुमिरत सकल भव दुख सरत जन प्रण लाज । बदत जेहि निगमादि यश ब्रह्मादि सन्त समाज ॥ नृप किशोरीबर शरण गह जन गरीब नेवाज ॥ ५ ॥

ललो लाल लालित्व लखि, लय लागी ललचाय ।
लाहु लाभ लावण्यला, लाइन कोई परभाय ॥ १ ॥
लट कारी लट लखि ललकि, लजी लाज अनुराग ।
लटक रही लयलव लगन लाय लाभ लत लाग ॥ २ ॥
ललचा लव लखने लगी लली लाल छवि लोन ।
लाज न ला लागी दृढ़ी लिया लपेट चितोन ॥ ३ ॥
ललित लतन बिच लखि अली लली लाल सुखधाम ।
ब्राज रहे गलबाहि दै चहुँ दिशि लली ललाम ॥ ४ ॥
सेवा सौंज सम्हार भल रहस रीत साहित्य ।
श्याम सुन्दरी युगल छवि निरखत मुद सह नित्य ।५।
ललित लाड़ली लाल लाल के ललित चरन की ओर ।
निज रसमय लागी रहै सहज सुरसि बर डोर ॥ ६ ॥
सत्य धर्म छोड़े नहीं, तजै अपनपो प्रान ।
निसि बासर चितवत रहैं, जानकी जीवन प्रान ॥ ७ ॥
युगल ललन युग काम तरु, भल मानस दातार ।
अति अपार करुणा निरखि जीव अपन पौवार ॥ ८ ॥

इति शुभमस्तुः ।